गौरैया और बन्दर-पंचतंत्र

किसी जंगल के एक घने वृक्ष की शाखाओं पर चिडा-चिडी का एक जोडा रहता था । अपने घोंसले में दोनों बडे सुख से रहते थे ।

सर्दियों का मौसम था । एक दिन हेमन्त की ठंडी हवा चलने लगी और साथ में बूंदा-बांदी भी शुरु हो गई । उस समय एक बन्दर बर्फीली हवा और बरसात से ठिठुरता हुआ उस वृक्ष की शाखा पर आ बैठा।

जाडे के मारे उसके दांत कटकटा रहे थे । उसे देखकर चिडिया ने कहा----"अरे ! तुम कौन हो ? देखने में तो तुम्हारा चेहरा आदमियों का सा है; हाथ-पैर भी हैं तुम्हारे । फिर भी तुम यहाँ बैठे हो, घर बनाकर क्यों नहीं रहते ?"

बन्दर बोला ----"अरी ! तुम से चुप नहीं रहा जाता ? तू अपना काम कर । मेरा उपहास क्यों करती है ?"

चिडिया फिर भी कुछ कहती गई । वह चिड गया । क्रोध में आकर उसने चिडिया के उस घोंसले को तोड-फोड डाला जिसमें चिडा-चिडी सुख से रहते थे ।

सीख : हर किसी को उपदेश नहीं देना चाहिये। बुद्धिमान् को दी हुई शिक्षा का ही फल होता है, मूर्ख को दी हुई शिक्षा का फल कई बार उल्टा निकल आता है।

अनुवाद - कुलदीप धर

गौरैया और बन्दर-पंचतंत्र

किसी जंगल के एक घने वृक्ष की शाखाओं पर चिड़ा-चिड़ी का एक जोड़ा रहता था। अपने घोंसले में दोनों बड़े आराम से रहते थे। सर्दियों का मौसम था। एक दिन हेमन्त की ठंडी हवा चलने लगी और साथ में बूंदा-बांदी भी शुरु हो गई। उस समय एक बन्दर बर्फीली हवा और बरसात से ठिठुरता हुआ उस वृक्ष की शाखा पर आ बैठा।

जाड़े के मारे उसके दांत कटकटा रहे थे। उसे देखकर चिड़िया ने कहा----"अरे ! तुम कौन हो ? देखने में तो तुम्हारा चेहरा आदमियों का सा है; हाथ-पैर भी है तुम्हारे। फिर भी तुम यहाँ बैठे हो, घर बनाकर क्यों नहीं रहते ?"

बन्दर बोला ----"अरी ! तुम से चुप नहीं रहा जाता ? तू अपना काम कर। मेरा उपहास क्यों करती है ?"
चिड़िया फिर भी कुछ कहती गई। वह चिढ़ गया। क्रोध में आकर उसने चिड़िया के उस घोंसले को तोड़-फोड़ डाला जिसमें चिड़ा-चिड़ी आराम से रहते थे।

सीख : हर किसी को उपदेश नहीं देना चाहिये। बुद्धिमान को दी हुई शिक्षा का ही फल होता है, मूर्ख को दी हुई शिक्षा का फल कई बार उल्टा निकल आता है।

अनुवाद - कुलदीप ठाकुर